ISSN No. :2456-2645

ACADEMIC SOCIAL RESEARCH

(An International Research Journal)

(UGC Approved-47715)

Vol.3 (October to December,2017)
Part -IV

CONTENTS

S.No.	PARTICULARS	P. No.
1.	वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में छात्र एवं उनकी समस्याएँ– अलका सिंह	1–2
2.	प्रतिशील समाज और शिक्षा में समावेशी शिक्षा की भूमिका – अनिल कुमार सिंह	3–4
3.	प्रतिशील समाज में शिक्षा और शिक्षक की भूमिका– अपर्णा निगम	5–6
4.	Changing demands in Teacher Education in Progressive Indian Society – डॉ0 अर्पिता सिंह	7–11
5.	RTI and its Challenges – आरती शुक्ला एवं रूकमिनी बाजपेयी	12–15
6.	जनजातीय एवं गैर जनजातीय विद्यार्थियों के स्वभाव एवं पर्यावरण संचेतना का तुलनात्मक अध्ययन–अवनीश द्विवेदी	16–17
7.	Role of Human Reflective Teacher for Environmental Literacy in Changing Scenario of Education- दिव्या सिंह	18–21
8.	Blended Learning- A Hybrid Approach to Learning - मिस. आरती भटनागर	22–25
9.	शिक्षा का अधिकार– दीपिका एवं डॉ0 अरूणा बाजपेयी	26–27
10.	Study of Old and Morden Teaching Methods– डॉ0 अरूण कुमार	28–29
11.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा का बदलता परिदृश्य – डॉ0 दीपाली सक्सेना	30–34
12.	आधुनिक तकनीकी : शिक्षा के परिप्रेक्ष्य – डॉ0 दीपिका श्रीवास्तव	35–36
13.	Mulslims in Higher Education : Opportunities and Obstacles- फरहान अबेदी	37–40
14.	LGP Model (Local Global Partnership) to tackle the challenges of LPG (Liberation, Privation & Globalization) in Indian Higher Education – डॉ0 गीता पाठक	41–45
15.	बदलते परिदृश्य में समाज एवं मूल्योन्मुखी शिक्षा – डॉ0 मंजू सिंह एवं डॉ0 आर. के. सिंह	46–48
16.	शिक्षा अधिकार अधिनियम–2009 की व्यावहारिक प्रासंगिकता– अमितेश कुमार सिंह एवं डॉ0 मुनेश कुमार	49–51
17.	शिक्षा का अधिकार– श्रीमती अनुपमा सिंह एवं डॉ0 राजन दीक्षित	52–53
18.	Role of Modern Technology and Science in Progressive Indian Education – दीपा पन्त	54–55
19.	जनपद इलाहाबाद में साक्षरता का बदलता परिदृश्य– धर्मेन्द्र कुमार भारतीय एवं डॉ0 रमाशंकर	56–58
20.	Changing value patterns in society and education – डॉ0 परमजीत कौर	59
21.	Peace Education : A Brief Study – डॉ0 प्रीती गुप्ता	60–61
22.	प्रगतिशील समाज में शान्ति और विकास के लिए शिक्षा – शैलेन्द्र कुमार एवं डॉ0 सरोज यादव	62–64
23.	प्रगतिशील भारतीय समाज में कौशल विकास के लिए शिक्षा की भूमिका – मो0 फैसल ईसा	65–67
24.	Right to Education Act- Latest Amendments to Assure Quality Education- हेमन्थ कुमार बी.सी.	68–71
25.	वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी युग के प्रगतिशील समाज में मीडिया का जनमानस पर प्रभाव– जितेन्द्र मोहन सिंह एवं डॉ0 नीना श्रीवास्तव	72–73
26.	वर्तमान समाज में शैक्षिक परिदृश्य और हमारी अस्मिता के प्रश्न – ज्योतिमा मौर्या	74–76
27.	वैश्वीकरण एवं शिक्षा – डॉ0 आभा सिंह	77–79
28.	प्रगतिश्ज्ञील भारत में शिक्षा का बदलता परिदृश्य– संयोगिता राठौड़	80
29.	शिक्षकों में बढ़ते मानसिक अवसाद के कारण और बचने के उपाय– श्रीमती सारिका शर्मा	81–82
30.	Impact of Globalization on Higher Education in India : Since 1991 to Present Time - शैलजा गुप्ता एवं प्रशान्त कुमार आस्ट्रलिन	83–86
31.	Awareness among primary school teachers about right to education - डॉ0 शैली	87–89
32.	भारतीय परिवेश में समाज, संस्कृति और शिक्षा का अन्तःसम्बन्ध – डॉ0 शालिनी विश्वकर्मा	90–91
33.	Changing scenario of higher education in progressive India- शिशुपाल सिंह	92–96
34.	शिक्षक एवं शिक्षार्थी में बढ़ते हुए मानसिक अवसाद के कारण एवं बचाव–श्रीमती कल्पना गुप्ता एवं श्रीमती ज्योति सचान	97–98
35.	समाज को प्रगतिशील बनाने के लिए अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में विकास – कमल कान्त एवं शरद कुमार यादव	99–100
36.	प्रगतिशील भारत में शिक्षा का बदलता परिदृश्य – डॉ0 किरन शर्मा	101–104
37.	Challenges in Globalization of Higher Education – ममता सिंह एवं ओमपाल सिंह	105–107
38.	Role of Technology in Education – मन्जूनाथ एचएम	108–110
39.	प्रगतिशील समाज में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका – मोनिका श्रीवास्तव	111–112
40.	Role of teachers in progressive society to deal with diverse learners in inclusive classrooms –मिस नेहा मदान	113–117
401.	Role of inclusive education in progressive society and education –डॉ0 नीना श्रीवास्तव एवं डॉ0 राजन दीक्षित	118–119
42.	प्रगतिशील समाज में शिक्षा में समावेशी शिक्षा की भूमिका– नीरज कुमार मिश्रा	120–121

ISSN No. 2456-2645

वैश्वीकरण एवं शिक्षा

डॉ. आभा सिंह
सहायक आचार्या–शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं–राजस्थान

शोध–सारांश

आज जो विभिन्न राष्ट्रों में क्रिया प्रतिक्रिया हो रही है, वह अन्य सभी राष्ट्रों को एक–दूसरे के करीब ला रही है तथा यह भौगोलिक सीमा को पार कर रहे हैं। आज वैश्वीकरण का युग है। देश–विदेश के बीच की सीमा गायब होती जा रही है और पूरा संसार एक गांव सा प्रतीत हो रहा है। आज समाज में होने वाली सभी गतिविधियों को वैश्वीकरण के संदर्भ में देखा जा रहा है। वैश्वीकरण का उद्देश्य राष्ट्रीय सरहदों को पार कर सम्पूर्ण विश्व को एकीकृत करना है। एक वक्त था जब वैश्वीकरण की संकल्पना को आर्थिक विश्लेशण के बढ़ते हुए वैश्विक महत्व, विश्व स्तर पर बढ़ते हुए आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जाता था। बाद में इसमें और भी कई पहलू शामिल हो गए जैसे अन्तर्राष्ट्रीय निगम, तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग, सांस्कृतिक सहयोग, स्थानान्तरण एवं शरणार्थी समस्या तथा अमीर–गरीब देशों के संबंध आदि। निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का प्रभावशाली यंत्र है। पुरातन समय से ही शिक्षा समाज हेतु उत्तम नागरिकों का निर्माण करती है।

वैश्वीकरण के संदर्भ शिक्षा के लक्ष्य है :–

1. मानवीय मूल्यों व संस्कृति का विकास
2. विश्व नागरिकता की भावना का विकास
3. शिक्षा प्राप्ति के लिये अनुशासन कायम रखने हेतु नये–नये दृष्टिकोण अपनाना
4. ज्ञान के नये–नये अवसर छात्र–छात्राओं को देना।
5. नई तकनीकी प्रयोग में लाकर शिक्षा देना
6. सभी राष्ट्रों के विज्ञान, तकनीकी तथा आर्थिक विकास के क्षेत्र में सम्बन्धित ज्ञान का विश्व स्तर पर आदान–प्रदान करना और एक–दूसरे के अनुभवों से लाभान्वित होना।

आज ज्ञान के उभरते क्षेत्रों से सम्बन्धित कोर्सों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इन कोर्सों में शिक्षा स्वतन्त्ररूप से दी जानी चाहिए। किन्तु आज विश्व मानव समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक और राष्ट्रगत वैमन्शय के कारण वैश्वीकरण के मूलतत्व एक विश्व मानव समाज'' का निर्माण कहीं खोता जा रहा है। अतः वर्तमान पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता का समावेश आवश्यक हो गया है। पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता के समावेश से ऐसे मानव के निर्माण का उद्देश्य पूर्ण होगा जो उदारता, सहिष्णुता तथा सामंजस्य सहानुभूति, स्नेह, भ्रातृत्व जैसे मानवीय गुणों से परिपूर्ण होगा। अतः यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि अध्यात्म आधारित पाठ्यक्रम ''सर्वे भवन्तु सुखिनः एवं वसुधैव कुटुम्बकम का उद्घोष करते हुए प्राणीमात्र का कल्याण व विश्व बन्धुत्व तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की स्थापना हेतु रामबाण है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा, विकास तथा आर्थिक व्यवस्था के सुधारों के फलस्वरूप आज तकनीकी एवं वैश्वीकरण के बीच सम्बन्ध स्थापित हो रहे है।

आज जो विभिन्न राष्ट्रों में क्रिया प्रतिक्रिया हो रही है, वह अन्य सभी राष्ट्रों को एक–दूसरे के करीब ला रही है तथा यह भौगोलिक सीमा को पार कर रहे हैं। आज वैश्वीकरण का युग है। देश–विदेश के बीच की सीमा गायब होती जा रही है और पूरा संसार एक गांव सा प्रतीत हो रहा है। आज समाज में होने वाली सभी गतिविधियों को वैश्वीकरण के संदर्भ में देखा जा रहा है। वैश्वीकरण का उद्देश्य राष्ट्रीय सरहदों को पार कर सम्पूर्ण विश्व को एकीकृत करना है।

वैश्वीकरण की कल्पना भारत में वैदिक युग से रही थी। आ न भ्रदः क्रतवोयन्तुविश्वतः की बात कही गयी है जिसमें विश्व को सुसंस्कृत करने का संकल्प है। सर्वेन सुखीन संतु में सर्वहित की मानसिकता है। आज के वैश्वीकरण के पीछे परहितवाद नहीं है स्वार्थता है। उसमें दूसरों को लूटने की भावना है। आज हम जिस वैश्वीकरण की बात करते हैं। वह उक्त वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना के विपरित है। आज जिस वैश्वीकरण का डंका बज रहा है। वह उक्त **'वसुधैव कुटुबंक'** की संकल्पना से एकदम अलग है। यह तो बाजारवाद को बढ़ावा देकर इनसानों के बीच दूरी पैदा कर रहा है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक बार कहा था ''मैं नहीं चाहता कि मेरा घर सब तरफ खड़ी हुई दीवारों से घिरा रहे और उसके दरवाजे और खिड़कियां बंद कर दी जाये। मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे घर के आस–पास देश–विदेश की संस्कृतियों की हवा बहती रहे। महात्मा गांधी की यह उक्ति वैश्वीकरण की अवधारणा का सार प्रस्तुत करती हैं। वैश्वीकरण की यह अवधारणा, जिसका अर्थ है कि किसी भी विशय, घटना, समस्या या सिद्धान्त को सम्पूर्ण विश्व के सन्दर्भ में देखा जाये। पर आधुनिक युग में वैश्वीकरण शब्द की अवधारणा एक नये रूप में सामने आयी है। वर्तमान युग संचार व प्रौद्योगिकी का युग है जहां पर वैश्वीकरण अपनी पूरी सक्रियता के साथ पूरे विश्व में विस्तारित होता जा रहा है और इसी वैश्वीकरण के कारण आज पूरा विश्व एक छोटी सी दुनिया में सिमट गया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने समस्त विश्व के देशों के लोगों के जीवन को चहुंमुखी प्रभावित किया है।

एक वक्त था जब वैश्वीकरण की संकल्पना को आर्थिक विश्लेषण के बढ़ते हुए वैश्विक महत्व, विश्व स्तर पर बढ़ते हुए आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जाता था। बाद में इसमें और भी कई पहलू शामिल हो गए जैसे अन्तर्राष्ट्रीय निगम, तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग, सांस्कृतिक सहयोग, स्थानान्तरण एवं शरणार्थी समस्या तथा अमीर–गरीब देशों के संबंध आदि। इस

प्रकार स्पष्ट है कि वैश्वीकरण का मुख्य बल आर्थिक पहलुओं पर है किन्तु इसमें सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहलू भी विशेष रूप से शामिल हो जाते हैं। अतः वैचारिक दृष्टि से वैश्वीकरण का आशय आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के सहलिन से है जिसके माध्यम से समान विश्व अधिकाधिक अन्तर्सबंधित एवं अन्तः निर्भर होता जा रहा है और जो एकल विश्व व्यवस्था की ओर प्रवृत है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया वास्तविक एवं आवश्यक है और यह द्रुत विकास एवं परिवर्तन के लिए आवश्यक है। इसका मानवीय जीवन के हर पहलू पर गहरा प्रभाव है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से विश्व के देशों को एकजुट किया जा सकता है। वैश्वीकरण के महान समर्थक सीमाहीन विश्व की कल्पना करते है। उनकी मान्यता है कि बढ़ती हुई आर्थिक गतिविधियों, पारस्परिक विनिमय, कम्प्यूटर, सूचना क्रान्ति, वैश्विक पूंजी का बहाव इत्यादि के कारण बड़े पैमाने पर विश्व राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से एकीकृत होता जा रहा है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने एक नये वैश्विक युग की धारण का प्रतिपादन किया है। इसके फलस्वरूप राज्य की स्वायत्तता कम हुई है और बाजारू शक्तियां अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

वैश्वीकरण के परिवर्तनवादी दृष्टिकोण के सम्पर्क दोनों दृष्टिकोणों के मध्य का मार्ग अपनाते है। इनकी मान्यता है वैश्वीकरण की प्रक्रिया से जो मौलिक परिवर्तन हो रहे है उनकी जड़े प्राचीन काल में है। अतः वे विभिन्न देशों के विभिन्न सामाजिक परम्पराओं एवं संस्कृतियों के महत्व को स्वीकार करते है तथा उन्हें बनाए रखने पर बल देते है। उनका यह भी तर्क है कि यह सच है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप विभिन्न देशों में नये–नये परिवर्तन हो रहे हैं और नये–नये विकास के क्षेत्र विकसित हुए है, किन्तु परिवर्तन की भी सीमा होनी चाहिए। उनका कहना है कि यदि एक मुक्त और गत्यात्मक प्रक्रिया के रूप में वैश्वीकरण किसी देश की सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीतिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन की बात करता है तो इन व्यवस्थाओं के मूल्यों, परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों के प्रति वह सम्मान का भाव भी रखे।

निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का प्रभावशाली यंत्र है। पुरातन समय से ही शिक्षा समाज हेतु उत्तम नागरिकों का निर्माण करती है। सभी विद्वान इस बात पर सहमति व्यक्त करते है कि शिक्षा के माध्यम से ही राष्ट्र का विकास व अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को बल मिलता है। शिक्षा से न केवल अच्छे व्यक्ति का निर्माण होता है वरन् एक उन्नत राष्ट्र एवं सभ्य समाज की कल्पना भी शिक्षा द्वारा ही सम्भव हो सकती है। अतः सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य को शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक शक्तियों से उन्मुक्त करती है और सबके हित के लिए अपने साथियों के सम्बन्ध में स्वतन्त्र अभिकर्ता के रूप में उसको अपने जीवन निर्माण की सामर्थ्य प्रदान करती है।

शिक्षा और समाज का अटूट सम्बन्ध होता है। सामाजिक जीवन और आदर्शों से शिक्षा के लक्ष्यों एवं मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है। वर्तमान युग वैश्वीकरण का युग है। विश्व को एक ग्राम की संज्ञा दी जा रही है। वैश्वीकरण का मूल आधार है स्वतन्त्रता और समानता। डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में "शिक्षा का मुख्य लक्ष्य जातीय एकता और विश्व समाज के लिए स्वतंत्रता तथा निष्ठा के आधार पर विश्व की पुनर्व्यवस्था करना है।" सभी स्वतन्त्रता चाहते है और सभी जीवन के क्षेत्र में समान अवसरों की मांग करते हैं।

वैश्वीकरण से प्रभावित शिक्षा व्यवस्था में भौतिक पक्ष पर अधिक बल दिया जा रहा है। ज्ञान की अभिवृद्धि, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति तथा भौतिकता के संचार के कारण विश्व परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। सम्पूर्ण विश्व में परिवर्तन चक्र गतिमान है। विश्व में सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तन भी तेजी से परिदृश्य को बदलते जा रहे हैं। इन परिवर्तनों के अनुरूप शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन नहीं हो पा रहे हैं, अत एव शिक्षा को वैश्वीकरण के अनुरूप लाने एवं जन आकांक्षाओं की प्रतिपूर्ति हेतु सक्षम बनाने के लिए नये विचारों, नई तकनीकों, नई शिक्षण विधियों की आवश्यकता है।

विश्व के परिवर्तित परिदेश के घटनाक्रम देखते हुए आज विश्व स्तर पर विभिन्न परिवर्तन हो रहे हैं। आज विज्ञान, तकनीकी, अन्तरिक्ष विज्ञान, कृषि, वाणिज्य तथा स्वास्थ्य आदि के अनेक क्षेत्रों में विशेषीकरण किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में आत्मनिर्भता, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विश्व स्तर पर शिक्षा के लक्ष्य निर्धारित किये जा रहे है। वैश्वीकरण के संदर्भ शिक्षा के लक्ष्य है–

1. मानवीय मूल्यों व संस्कृति का विकास
2. विश्व नागरिकता की भावना का विकास
3. शिक्षा प्राप्ति के लिये अनुशासन कायम रखने हेतु नये–नये दृष्टिकोण अपनाना
4. ज्ञान के नये–नये अवसर छात्र–छात्राओं को देना।
5. नई तकनीकी प्रयोग में लाकर शिक्षा देना
6. सभी राष्ट्रों के विज्ञान, तकनीकी तथा आर्थिक विकास के क्षेत्र में सम्बन्धित ज्ञान का विष्व स्तर पर आदान–प्रदान करना और एक–दूसरे के अनुभवों से लाभान्वित होना।

वैश्वीकरण एवं पाठ्यक्रमः– आज ज्ञान के उभरते क्षेत्रों से सम्बन्धित कोर्सों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इन कोर्सों में शिक्षा स्वतन्त्र रूप से दी जानी चाहिए। इन विस्तृत पाठ्यक्रमों की अधिकता से विधिता भी बढ़ती है। ऐसे पाठ्यक्रम से विकासशील व विकसित देशों में सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक वातावरण में स्वस्थ सकारात्मक विचार तो आते ही है, साथ ही छात्र–छात्राओं की आवश्यकता की पूर्ति भी होती है। किन्तु आज विश्व मानव समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक और राष्ट्रगत वैमन्श्य के कारण वैश्वीकरण के मूलतत्व एक विश्व मानव समाज" का निर्माण कहीं खोता जा रहा है। अतः वर्तमान पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता का समावेदश आवश्यक हो गया है।

विश्व मानव की आधारभूत आवश्यकता का स्वरूप, आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक है। वर्तमान में वैश्वीकरण आर्थिक व बौद्धिक तथा अल्पमात्रा में सामाजिकता तक सिमट गया है। शिक्षा में आध्यात्मिक तत्व का अभाव है। मनुष्य का आध्यात्मिक पक्ष उसकी आध्यात्मिक आवश्यकता का निर्धारण करता है। मनुष्य एक चिन्तनशील व अध्यात्मिक प्राणी है जो अपनी प्रकृति को उच्चतर प्रयोजनों की सिद्धि के लिए नियोजित करता है। आध्यात्मिकता मानवीय चेतना की जागृति का मूलभूत आधार है। वर्तमान विश्वकल्याण हेतु इसकी नितान्त आवश्यकता है। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना व विश्व बन्धुत्व के लिए मानव में मानवीयता व आध्यात्मिक चेतना का जाग्रत होना आवश्यक है। अतः शिक्षा का आधारभूत ढांचा इसके बिना अपूर्ण है। मनुष्य एक आध्यात्मिक प्राणी है तथा इसके जीवन का लक्ष्य मानव कल्याण व विश्वबन्धुत्व है जो वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा पर आधारित है। किन्तु आधुनिक मानव समाज में पोशकता के स्थान पर शोषकता, पालकता के स्थान पर भक्षकता तथा कल्याण के स्थान पर अकल्याण की वृद्धि हो रही है। विभिन्न राष्ट्रों के मध्यम प्रति स्पर्धा, द्वेश तथा घृणा की भावनाएं उग्र रूप धारण करती जा रही है। जहां एक ओर विश्व ग्राम की बात कही जा रही है वहीं प्रत्येक शक्तिशाली राष्ट्र कमजोर राष्ट्र पर शासन करना चाह रहा है। शक्ति संतुलन के भंग होने पर किसी भी समय विश्व युद्ध की चपेट में आने की

प्रकार स्पष्ट है कि वैश्वीकरण का मुख्य बल आर्थिक पहलुओं पर है किन्तु इसमें सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहलू भी विशेष रूप से शामिल हो जाते हैं। अतः वैचारिक दृष्टि से वैश्वीकरण का आशय आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के सहलिन से है जिसके माध्यम से समान विश्व अधिकाधिक अन्तर्संबंधित एवं अन्तः निर्भर होता जा रहा है और जो एकल विश्व व्यवस्था की ओर प्रवृत है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया वास्तविक एवं आवश्यक है और यह द्रुत विकास एवं परिवर्तन के लिए आवश्यक है। इसका मानवीय जीवन के हर पहलू पर गहरा प्रभाव है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से विश्व के देशों को एकजुट किया जा सकता है। वैश्वीकरण के महान समर्थक सीमाहीन विश्व की कल्पना करते है। उनकी मान्यता है कि बढ़ती हुई आर्थिक गतिविधियों, पारस्परिक विनिमय, कम्प्यूटर, सूचना क्रान्ति, वैश्विक पूंजी का बहाव इत्यादि के कारण बड़े पैमाने पर विश्व राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से एकीकृत होता जा रहा है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने एक नये वैश्विक युग की धारण का प्रतिपादन किया है। इसके फलस्वरूप राज्य की स्वायत्तता कम हुई है और बाजारू शक्तियां अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

वैश्वीकरण के परिवर्तनवादी दृष्टिकोण के सम्पर्क दोनों दृष्टिकोणों के मध्य का मार्ग अपनाते है। इनकी मान्यता है वैश्वीकरण की प्रक्रिया से जो मौलिक परिवर्तन हो रहे है उनकी जड़े प्राचीन काल में है। अतः वे विभिन्न देशों के विभिन्न सामाजिक परम्पराओं एवं संस्कृतियों के महत्व को स्वीकार करते है तथा उन्हें बनाए रखने पर बल देते है। उनका यह भी तर्क है कि यह सच है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप विभिन्न देशों में नये–नये परिवर्तन हो रहे हैं और नये–नये विकास के क्षेत्र विकसित हुए है, किन्तु परिवर्तन की भी सीमा होनी चाहिए। उनका कहना है कि यदि एक मुक्त और गत्यात्मक प्रक्रिया के रूप में वैश्वीकरण किसी देश की सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीतिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन की बात करता है तो इन व्यवस्थाओं के मूल्यों, परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों के प्रति वह सम्मान का भाव भी रखे।

निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का प्रभावशाली यंत्र है। पुरातन समय से ही शिक्षा समाज हेतु उत्तम नागरिकों का निर्माण करती है। सभी विद्वान इस बात पर सहमति व्यक्त करते है कि शिक्षा के माध्यम से ही राष्ट्र का विकास व अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को बल मिलता है। शिक्षा से न केवल अच्छे व्यक्ति का निर्माण होता है वरन् एक उन्नत राष्ट्र एवं सभ्य समाज की कल्पना भी शिक्षा द्वारा ही सम्भव हो सकती है। अतः सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य को शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक शक्तियों से उन्मुक्त करती है और सबके हित के लिए अपने साथियों के सम्बन्ध में स्वतन्त्र अभिकर्ता के रूप में उसको अपने जीवन निर्माण की सामर्थ्य प्रदान करती है।

शिक्षा और समाज का अटूट सम्बन्ध होता है। सामाजिक जीवन और आदर्शों से शिक्षा के लक्ष्यों एवं मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है। वर्तमान युग वैश्वीकरण का युग है। विश्व को एक ग्राम की संज्ञा दी जा रही है। वैश्वीकरण का मूल आधार है स्वतन्त्रता और समानता। डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में "शिक्षा का मुख्य लक्ष्य जातीय एकता और विश्व समाज के लिए स्वतंत्रता तथा निष्ठा के आधार पर विश्व की पुनर्व्यवस्था करना है।" सभी स्वतन्त्रता चाहते है और सभी जीवन के क्षेत्र में समान अवसरों की मांग करते हैं।

वैश्वीकरण से प्रभावित शिक्षा व्यवस्था में भौतिक पक्ष पर अधिक बल दिया जा रहा है। ज्ञान की अभिवृद्धि, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति तथा भौतिकता के संचार के कारण विश्व परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। सम्पूर्ण विश्व में परिवर्तन चक्र गतिमान है। विश्व में सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तन भी तेजी से परिदृश्य को बदलते जा रहे हैं। इन परिवर्तनों के अनुरूप शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन नहीं हो पा रहे हैं, अत एव शिक्षा को वैश्वीकरण के अनुरूप लाने एवं जन आकांक्षाओं की प्रतिपूर्ति हेतु सक्षम बनाने के लिए नये विचारों, नई तकनीकों, नई शिक्षण विधियों की आवश्यकता है।

विश्व के परिवर्तित परिदेश के घटनाक्रम देखते हुए आज विश्व स्तर पर विभिन्न परिवर्तन हो रहे हैं। आज विज्ञान, तकनीकी, अन्तरिक्ष विज्ञान, कृषि, वाणिज्य तथा स्वास्थ्य आदि के अनेक क्षेत्रों में विशेषीकरण किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में आत्मनिर्भता, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विश्व स्तर पर शिक्षा के लक्ष्य निर्धारित किये जा रहे हैं। वैश्वीकरण के संदर्भ शिक्षा के लक्ष्य है–

1. मानवीय मूल्यों व संस्कृति का विकास
2. विश्व नागरिकता की भावना का विकास
3. शिक्षा प्राप्ति के लिये अनुशासन कायम रखने हेतु नये–नये दृष्टिकोण अपनाना
4. ज्ञान के नये–नये अवसर छात्र–छात्राओं को देना।
5. नई तकनीकी प्रयोग में लाकर शिक्षा देना
6. सभी राष्ट्रों के विज्ञान, तकनीकी तथा आर्थिक विकास के क्षेत्र में सम्बन्धित ज्ञान का विष्व स्तर पर आदान–प्रदान करना और एक–दूसरे के अनुभवों से लाभान्वित होना।

वैश्वीकरण एवं पाठ्यक्रमः– आज ज्ञान के उभरते क्षेत्रों से सम्बन्धित कोर्सों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इन कोर्सों में शिक्षा स्वतन्त्र रूप से दी जानी चाहिए। इन विस्तृत पाठ्यक्रमों की अधिकता से विधिता भी बढ़ती है। ऐसे पाठ्यक्रम से विकासशील व विकसित देशों में सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक वातावरण में स्वस्थ सकारात्मक विचार तो आते ही है, साथ ही छात्र–छात्राओं की आवश्यकता की पूर्ति भी होती है। किन्तु आज विश्व मानव समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक और राष्ट्रगत वैमन्स्य के कारण वैश्वीकरण के मूलतत्व एक विश्व मानव समाज" का निर्माण कहीं खोता जा रहा है। अतः वर्तमान पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता का समावेदश आवश्यक हो गया है।

विश्व मानव की आधारभूत आवश्यकता का स्वरूप, आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक है। वर्तमान में वैश्वीकरण आर्थिक व बौद्धिक तथा अल्पमात्रा में सामाजिकता तक सिमट गया है। शिक्षा में आध्यात्मिक तत्व का अभाव है। मनुष्य का आध्यात्मिक पक्ष उसकी आध्यात्मिक आवश्यकता का निर्धारण करता है। मनुष्य एक चिन्तनशील व अध्यात्मिक प्राणी है जो अपनी प्रकृति को उच्चतर प्रयोजनों की सिद्धि के लिए नियोजित करता है। आध्यात्मिकता मानवीय चेतना की जागृति का मूलभूत आधार है। वर्तमान विश्वकल्याण हेतु इसकी नितान्त आवश्यकता है। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना व विश्व बन्धुत्व के लिए मानव में मानवीयता व आध्यात्मिक चेतना का जाग्रत होना आवश्यक है। अतः शिक्षा का आधारभूत ढांचा इसके बिना अपूर्ण है। मनुष्य एक आध्यात्मिक प्राणी है तथा इसके जीवन का लक्ष्य मानव कल्याण व विश्वबन्धुत्व है जो वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा पर आधारित है। किन्तु आधुनिक मानव समाज में पोशकता के स्थान पर शोषकता, पालकता के स्थान पर भक्षकता तथा कल्याण के स्थान पर अकल्याण की वृद्धि हो रही है। विभिन्न राष्ट्रों के मध्यम प्रति स्पर्धा, द्वेश तथा घृणा की भावनाएं उग्र रूप धारण करती जा रही है। जहां एक ओर विश्व ग्राम की बात कही जा रही है वहीं प्रत्येक शक्तिशाली राष्ट्र कमजोर राष्ट्र पर शासन करना चाह रहा है। शक्ति संतुलन के भंग होने पर किसी भी समय विश्व युद्ध की चपेट में आने की

सम्भावना बनी रह रही है। उपयुक्त अनपेक्षित परिस्थितियों के निराकरण का उपाय है शिक्षा में अध्यात्म का समावेश। अध्यात्म में किसी भी प्रकार की विभिन्नता, भेद तथा पृथकता के लिए स्थान नहीं है। पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता के समावेश से ऐसे मानव के निर्माण का उद्देश्य पूर्ण होगा जो उदारता, सहिष्णुता तथा सामंजस्य सहानुभूति, स्नेह, भ्रातृत्व जैसे मानवीय गुणों से परिपूर्ण होगा। अतः यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि अध्यात्म आधारित पाठ्यक्रम "सर्वे भवन्तु सुखिनः एवं वसुधैव कुटुम्बकम का उद्घोष करते हुए प्राणी मात्र का कल्याण व विश्वबन्धुत्व तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की स्थापना हेतु रामबाण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पाण्डे, रामशकल (2008), उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
2. विश्वनाथ बिहारी लाल, त्रिपाठी, नरेश चन्द्र (2008), शिक्षा में नवाचार, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
3. https//sol.du.ac.in/mod>book>view वैश्वीकरण एवं इसका श्रमिको, किसानो, दलितो, आदिवासियों एवं महिलाओं पर प्रभाव, राजेन्द्र कुमार पाण्डे, हिन्दु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।
4. shikshavimarsh. blogsport.com>2017/03 वर्तमान शैक्षिक वैश्वीकरण के परिवेश में वेदान्त दर्शन की शैक्षिक उपादेयता व व्यवहारपरक प्रासंगिकता की विवेचना।